अजा एकादशी — चयनित पूर्ण कथा का पुनर्कथन

Aja Ekadashi Katha — Complete Selected Chapter Retelling

Source: Sanskrit Wikisource contributors — complete chapter 56, controlling revision 336437. Also compared: Wikisource revision API — exact complete controlling wikitext; Creative Commons Attribution–ShareAlike 4.0 — adaptation licence; Wisdomlib Sanskrit chapter 56 — complete electronic comparison; Wisdomlib / N. A. Deshpande chapter 56 — full English comparison only, prose not copied; Wikisource rightsinfo — site-wide CC BY-SA 4.0 reuse basis.

Valkala's own retelling of the katha in Padma Purana, Uttara Khanda 6.56.1–23, Sanskrit Wikisource revision 336437, not a transcription of the original text.

अजा और हरिश्चन्द्र की कठिन स्थिति

KATHA 6.56.1–11

युधिष्ठिर जनार्दन से भाद्रपद के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम पूछते हैं। कृष्ण उसे अजा कहते हैं और हृषीकेश की पूजा, व्रत तथा उसके सुनने को पाप-क्षय और दोनों लोकों के हित से जोड़ते हैं। वे अपनी बात सत्य बताते हुए पुराने सत्यसंध चक्रवर्ती हरिश्चन्द्र की कथा कहते हैं।

किसी कर्म के फल की धार्मिक व्याख्या में राजा राज्य से वंचित होते हैं। कथा पत्नी और पुत्र के बेचे जाने तथा राजा के स्वयं बिकने का उल्लेख करती है। वे पुल्कस कहे गये व्यक्ति की दासता में मृतकों के वस्त्र लेने का काम करते हैं, फिर भी सत्य से नहीं हटते। बहुत वर्ष इसी प्रकार बीतते हैं। चिंतित राजा सोचते हैं कि क्या करें, कहाँ जाएँ और कष्ट से कैसे निकलें। उनकी व्याकुलता जानकर एक मुनि आते हैं। कृष्ण द्विजों के परोपकार के लिए ब्रह्मा द्वारा बनाये जाने की धार्मिक प्रशंसा कहते हैं। राजा मुनि को प्रणाम करते हैं।

मनुष्यों की बिक्री, दासता और प्राचीन सामाजिक पद इस कहानी की कठिन परिस्थिति हैं, आज स्वीकार्य व्यवहार या किसी जाति के सम्मान का माप नहीं। गरीबी या शोक को नैतिक दोष न मानें और परिवार पर सत्य या व्रत के नाम पर दबाव न डालें।

Yudhishthira asks Janardana to name Bhadrapada's dark-fortnight Ekadashi. Krishna calls it Aja and associates worship of Hrishikesha, observance and hearing the account with release from sin and welfare in both worlds. Affirming his words as true, he tells of the truth-keeping emperor Harishchandra.

Within a religious explanation involving the result of an unspecified deed, the king loses his kingdom. The account mentions the sale of his wife and son and his own sale. Enslaved to a person called pulkasa, he takes clothing from the dead while remaining faithful to truth. Years pass. Anxious and distressed, he wonders what to do, where to go and how to escape suffering. A sage comes, aware of his distress. Krishna praises dvijas as created by Brahma to help others. The king bows to the sage.

Human sale, enslavement and ancient social labels describe hardship in the story, not acceptable present-day conduct or a measure of caste dignity. Poverty or grief is not moral fault; do not pressure a family in the name of truth or a vow.

गौतम का पूरा मार्गदर्शन

KATHA 6.56.12–17

राजा हाथ जोड़कर गौतम के सामने अपनी दुखभरी स्थिति कहते हैं। गौतम सुनकर विस्मित होते हैं और भाद्रपद कृष्ण अजा का पुण्य बताते हैं। वे कहते हैं कि यह सातवें दिन आने वाली है और उसके व्रत से पाप का अन्त होगा। उपवास और रात में जागरण का उपदेश भी आता है। राजा के पुण्य के प्रभाव से अपने आने की बात कहकर मुनि अन्तर्धान हो जाते हैं।

यह संवाद कथा के भीतर का मार्गदर्शन है। सात दिनों से किसी वर्ष या स्थान की वास्तविक एकादशी-तिथि न निकालें। पाठक के लिए उपवास, नींद रोकना या यही विधि अपनाना आवश्यक नहीं है; भोजन, पानी, विश्राम और जरूरी उपचार जारी रखें। गौतम का आश्वासन किसी व्यक्ति के धन, राज्य, परिवार या दुख लौटने-मिटने की निश्चित गारंटी नहीं।

With joined hands, the king tells Gautama his sorrowful situation. The sage is astonished and explains the merit of Bhadrapada's dark Aja. He says it is coming on the seventh day and that observance will end sin. His advice includes fasting and a night vigil. Saying he has come through the king's merit, the sage disappears.

This is guidance within the story. The seven-day interval does not calculate an actual annual Ekadashi date for any place. Readers need not fast, lose sleep or follow this procedure; food, water, rest and necessary treatment continue. Gautama's assurance is not a guaranteed restoration of anyone's wealth, kingdom or family, or an end to their distress.

पुनर्मिलन, धार्मिक फल और पूरा समापन

KATHA 6.56.18–23

राजा मुनि की बात सुनकर व्रत करते हैं। कथा तत्काल पाप-क्षय और कई वर्षों तक रहने वाले दुख के अन्त की प्रशंसा करती है। हरिश्चन्द्र पत्नी से मिलते हैं और पुत्र का जीवन पाते हैं। चयनित संस्कृत में पुत्र के जीवन का संक्षिप्त उल्लेख है; इसके पहले मृत्यु, सर्पदंश या बाद में पुनर्जीवन का अलग दृश्य नहीं सुनाया गया। आकाश में दुंदुभियाँ बजती हैं और फूल बरसते हैं। राजा बाधारहित राज्य पाते हैं और अपने नगर तथा साथ के लोगों-सामग्री सहित स्वर्ग प्राप्त करते हैं।

कृष्ण इसी प्रकार पालन करने वालों की पाप-मुक्ति और स्वर्ग-प्राप्ति की प्रशंसा करते हैं। कथा पढ़ने या सुनने का फल अश्वमेध के समान कहा गया है। अध्याय 56 का अलग समापन-वाक्य उत्तरखण्ड के उमापति–नारद संवाद में भाद्रपद कृष्ण अजा को नाम देता है; तत्काल संवाद कृष्ण–युधिष्ठिर है।

यह चयनित अध्याय का पूरा अन्त है, सभी लोकप्रिय हरिश्चन्द्र प्रसंगों का संकलन नहीं। फूल, स्वर्ग, पारिवारिक पुनर्मिलन और पुत्र-जीवन धार्मिक कथा की भाषा हैं, शोक में किसी परिवार पर दोष या चमत्कार की गारंटी नहीं। यहाँ किसी की मृत्यु बदलने, गरीबी दूर करने या परिवार वापस मिलने का निश्चित दावा नहीं किया जाता।

The king follows the sage's advice and observes the vow. The story praises immediate release from sin and the ending of suffering that would otherwise last for years. Harishchandra reunites with his wife and obtains his son's life. The Sanskrit briefly mentions the son's life; it narrates no separate prior death, snakebite or subsequent resurrection scene. Celestial drums sound and flowers fall. The king regains an unobstructed kingdom and reaches heaven with his city and accompanying people and belongings.

Krishna praises those observing similarly as released from sin and reaching heaven. Reading or hearing the account is compared with an Ashvamedha sacrifice. A separate chapter-56 colophon names Bhadrapada's dark Aja within the Uttara section's Umapati–Narada dialogue; the immediate exchange remains Krishna–Yudhishthira.

This is the full selected ending, not a compilation of every popular Harishchandra episode. Flowers, heaven, family reunion and the son's life are religious narrative imagery, not blame directed at a bereaved family or a miracle guarantee. No reversal of death, relief of poverty or return of a family is assured here.

Source licence notice (it travels with every copy of this text):

Aja Ekadashi Katha — adapted from Sanskrit Wikisource contributors, Padma Purana 6.56.1–23, revision 336437, linked in Sources. Electronic source: CC BY-SA 4.0, https://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/ . Changes: original condensed Hindi prose, full Roman-Hindi and English renditions, summaries and contextual notices by Valkala Editorial (2026). These adaptations are distributed under CC BY-SA 4.0. No source endorsement implied. This licence covers the retelling and its language layers, not unrelated code or site content. No modern Wisdomlib translation is included.
Copyright 2026 Valkala Editorial (original adaptations); shared under CC BY-SA 4.0. Attribution remains Sanskrit Wikisource contributors.